Vol. VI. No. 1.

THE
Bihar Legislative Assembly Debates

Official Report

Monday, the 7th February, 1949.

To

24th March 1949

SUPERINTENDENT, GOVERNMENT PRINTING
BIHAR, PATNA.
1950.

[*Price—Annas 6*]

बिहार विधायिका सभा का वादवृत्त

बुधवार, तिथि २ मार्च, १९४९

भारत शासन विधान, १९३५, के प्रावधान के अनुसार एकत्र विधायिका सभा का कार्य-विवरण

सभा की बैठक पटने के सभा वेश्मभें बुधवार तिथि २ मार्च १९४९ को ११-३० बजे पूर्वान्ह में माननीय प्रमुख श्री विन्ध्येश्वरीप्रसाद वर्मा के सभापतित्व में हुई।

श्रीमती सरोजिनी नायडू की मृत्यु पर शोक प्रकाश

माननीय प्रमुख :

माननीय सभासदो, मनुष्य नहीं जानता कि एक क्षण के बाद क्या हो सकता है। कल तक श्रीमती सरोजिनी नायडू हमारे एक प्रांत की शासक थीं और आज वे संसार से चल बसीं। उनका स्वास्थ्य इधर गिरता जा रहा था। डाक्टर विधानचंद्र राय ने हाल ही में उनसे मिलकर उन्हें पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी थी। कमला-नेहरू अस्पताल में बेगम आजाद नाम से जिस नए भवन का निर्माण हुआ है, उसके उद्घाटन के अवसर पर वह लखनऊ से इलाहाबाद जाने वाली थीं। रोगग्रस्त होने के कारण वह इलाहाबाद जा तो नहीं सकीं, किंतु अपने परिवार के लोगों को उन्होंने वहां भेज दिया और आप अकेली रह गईं। आज सुबह में साढ़े तीन बजे हृदय की गति एक-ब-एक रुक जाने से उनका देहान्त हो गया।

श्रीमती सरोजिनी नायडू अपने समय के उच्चतम क्रान्तिकारियों में से थीं। शारीरिक कष्टों को सहकर जितने धैर्य से उन्होंने मातृभूमि की सेवा की और उसकी स्वतंत्रता के लिए उन्होंने जो प्रयत्न किया, वह हमारे देश के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जायगा।

कांग्रेस आन्दोलन में उन्होंने बहुत बड़ा क्रियात्मक भाग लिया था। इंडियन नेशनल कांग्रेस की प्रेसिडेंट तथा आल इंडिया कांग्रेस कमिटी की सदस्या रह कर देश के स्वराज्य-संग्राम को सफल बनाने में उनका बहुत बड़ा हाथ था। वह एक प्रसिद्ध वक्ता भी थीं। कांग्रेस के कार्यकर्ता कांग्रेस-पंडाल में उनके भाषण

सुनने के लिए लालायित रहा करते थे। श्रोताओं पर उनके भाषण का अद्भुत प्रभाव पड़ता था। उनका यश, उनकी ख्याति सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि संसार के प्रत्येक देश में फैली हुई है। एक बड़े प्रांत की शासक होकर उन्होंने अपना उत्तरदायित्व बड़ी खूबी के साथ निबाहा। ऐसे महान व्यक्ति के निधन से जो स्थान खाली हुआ है उसका शीघ्र भरना संभव नहीं है। इस समय देश को उन जैसी योग्य महिला की अत्यन्त आवश्यकता थी, पर विधि के विधान में किसी का वश नहीं चलता। क्रूर काल की गति विचित्र है। आज इस प्रांत और समस्त देश पर उनकी मृत्यु का शोक छाया हुआ है।

माननीय डा० श्रीकृष्ण सिंह :

अध्यक्ष महोदय, जिस महान व्यक्ति के निधन की चर्चा अभी आपने की है, उस समाचार से आज सारा हिन्दुस्तान स्तब्ध हुआ होगा और इसका खास कारण है। जिस वक्त उनकी मृत्यु हुई, उस वक्त वे हिन्दुस्तान के एक बड़े प्रान्त की गवर्नर थीं और हिन्दुस्तान की पहली महिला गवर्नर थीं। इसी कारण आज हम लोग समवेदना प्रकट कर रहे हैं, लेकिन आज जो हमारा दुख है और इस समाचार को पढ़ कर सारे हिन्दुस्तान को जो दुख हुआ है उसका कारण कुछ और भी है।

वे प्रतिभाशाली व्यक्ति थीं। इङ्गलैंड में उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनकी रुचि कविता बनाने की ओर गई। उनकी कविताओं को पढ़ने से मालूम होता है कि उनमें उच्च कोटि की कविता बनाने की शक्ति थी और वह अच्छे भावों की कल्पना कर सकती थीं। उन्हीं कल्पनाओं के आधार पर वह सुन्दर से सुन्दर कविता रच सकती थीं। यही कारण था कि राजनैतिक क्षेत्र में आने पर भी वे बुलबुले हिन्द यानी हिन्दुस्तान की बुलबुल के नाम से प्रसिद्ध थीं। केवल वे कवि ही नहीं थीं बल्कि उनकी बोली में ओज था, शक्ति थी और वे धाराप्रवाह वक्तृता देने वाली थीं।

वक्तृता कई प्रकार की होती है। एक तो वह है जो अपने ओज से श्रोताओं के हृदय-पट पर अपना प्रभाव पैदा करती है। दूसरी प्रकार की वक्तृता वह होती है जो बोली की मिठास के कारण अपनी बातों को सुन्दर भावों से ओत-प्रोत कर, श्रोताओं के ऊपर एक दूसरी तरह का प्रभाव डालती है और श्रीमती नायडू इसी प्रकार की वक्तृता देने वाली बुलबुल थीं। कवि होने के साथ-साथ वे सुन्दर भाषण दे सकती थीं और उसका परिणाम यह था कि जिस सभा में वे खड़ी होती थीं, श्रोतागण मंत्र-मुग्ध होकर उनकी बातों को सुनते थे। अभी आपने इसी बात की चर्चा की है। हाल ही में जब दिल्ली की महानगरी में विधान परिषद (Constituent Assembly) की बैठक आरम्भ हुई, तो मुझे याद है—उस सभा के अच्छे लोगों ने किस तरह उनको मजबूर करके उस असेम्बली में बोलने के लिये लाचार किया था। मैं उनकी बगल में बैठा था, वे बोलना नहीं चाहती थीं, पर

जब लोगों ने परेशान किया तब अन्त में मजबूर होकर वे बोलने के लिये खड़ी हुई थीं लेकिन उस बोली में वही ओज था, वह मिठास थी जिसने सभा के सब सभासदों को मंत्र-मुग्ध कर डाला।

वे कवि ही नहीं थीं, बल्कि जब हिन्दुस्तान की आजादी का जंग महात्मा गान्धी जी के नेतृत्व में छिड़ा तो उसमें भी उनका प्रधान अंग था। एक कवि होते हुए भी, एक वक्ता होते हुए भी, आजादी की लड़ाई में सिपहसालार होना एक बड़ी अद्‌भुत बात थी। लेकिन मालूम होता है कि कल्पना-शक्ति के कारण उनका हृदय भावों से भरा हुआ था। इसी विशेषता के कारण जब महात्मा गांधी जी का पदार्पण भारत के राजनैतिक क्षेत्र में हुआ तो बुलेबुले हिन्द उनके जादू में पड़ गईं और उनके कार्यक्षेत्र में महान परिवर्त्तन हुआ। इसके बाद वे राजनैतिक क्षेत्र में विशेष दिलचस्पी लेने लगीं और उनकी बातों से मालूम होता था कि महात्मा जी के जीवन का प्रभाव उन पर बहुत दूर तक पड़ा है। जिस समय महात्मा जी ने स्मरणीय यरवदा जेल में आम के वृक्ष को रोपा था, उस समय उस आम के गाछ की ओर इशारा करते हुए, उस कल्पना करने वाली कविने कहा था कि जिस तरह वह वृक्ष के नीचे महात्मा गौतम बुद्ध को शांति और ज्ञान मिला था, उसी तरह महात्मा गान्धी को इस वृक्ष के नीचे आजादी की लड़ाई में जीत होगी। महात्मा गान्धी जी के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई को आगे बढ़ाने के लिये उन्हों ने बड़ी कोशिश की और इस सम्बन्ध में उन्हें कई बार जेल-यात्रा भी करनी पड़ी। यही कारण था कि आज सारा हिन्दुस्तान शोक-संतप्त है। वे हिन्दुस्तान की पहली महिला गवर्नर ही नहीं थीं, बल्कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की पहली सभासद थीं और बहुत दिनों तक अखिल भारतीय कांग्रेस वर्किङ्ग कमिटी की सभासद रहीं। आजादी की लड़ाई में भाग लेने का और बहादुराना प्रदर्शन का भी उन्हें मौका मिला था। कवि और भावपूर्ण वक्ता हो कर भी उन्होंने जिस प्रकार नमक सत्याग्रह के सिलसिले में, धर्षना मैदानमें, महात्मा गांधी के अहिंसा व्रत को धारण करके धावा बोला था उसका इतिहास राजनैतिक इतिहास में अमर रहेगा। चूंकि वे हमारी नेत्री थीं, चूंकि उन्होंने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था, और आज हम जिस आजाद हिन्दुस्तान को पाते हैं उसकी सृष्टि करने में भी उनका काफी हाथ था, इसलिये भी वे हमारी श्रद्धा और विश्वास की पात्र थीं।

मैं आशा करता हूँ और आपने भी कहा है कि मनुष्य की दृष्टि इतनी सीमित है कि वह नहीं जानता है कि कब क्या होने वाला है।

हाल ही में वे पटना आयी थीं और पटना विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सामने जो उन्होंने भाषण दिया था वे सारे के सारे शब्द, जब मैंने उनकी मृत्यु का समाचार सुना है मेरे कानों में गूंज रहे हैं। उसी समय उन्होंने कुछ ऐसे शब्द

कहे थे जिनको सुनकर मुझे काफी दुख हुआ था और इसी सिलसिले में मैंने उन्हें एक पत्र लिखा था जिसके उत्तर में उन्होंने लिखा कि "ऐ मेरे प्यारे बच्चे ? मैं तो तुम्हारी बगल में ही बैठी थी, मैं तो केवल गवर्नर ही नहीं हूँ बल्कि तुम्हारा एक भाई हूँ। यदि तुम्हें दुख हुआ था तो क्यों नहीं वहीं पर मुझ से साफ साफ कह दिया था।"

वे हिन्दुस्तान की एक महान नेत्री थीं। साथ ही साथ उनका हृदय ऐसा था कि वे हम लोगों के हृदय को भी बड़ी आसानी से अपनी ओर खींच लेती थीं। आज उनके चले जाने से हमलोगों को बहुत दुख है। मैं आशा करता हूँ कि आप व्यवस्थापिका सभा की ओर से एक समवेदना सूचक पत्र उनके शोक-संतप्त परिवार को भेज देंगे।

श्री लतीफुर रहमान :

जनाब सदर, आज श्रीमती सरोजिनी नायडू, जिन्हें हिन्दुस्तान का बुलबुले हिन्द कह कर पुकाराजाता था, इस दुनियां को छोड़ कर चल बसीं। आज उनकी इस गमी पर मैं अपनी ओर से और अपनी पार्टी की ओर से मातमपुरसी करता हूँ। श्रीमती नायडू, एक अच्छी शासक ही नहीं थीं बल्कि वे हिन्दुस्तान की एक बहुत बड़ी शायरा और बहुत बड़ी सयासतदां थीं। उन्होंने हिन्दुस्तान की जंगे-आजादी की लड़ाई में बहुत बड़ा भाग लिया था। आज सबेरे जिस वक्त मैंने उनकी मृत्यु की दुखदायी खबर सुनी है उसी वक्त से मेरे कानों में उनकी एक तकरीर गूंजने लगी। जिस समय गया में कांग्रेस हुई थी उस वक्त हिन्दुओं और मुसलमानों को एकता का पैगाम देते हुए उनकी जो तकरीर हुई थी उसका जनता पर बड़ा असर पड़ा था। वह हिन्दुस्तान को आजादी की प्रचारक थीं। मैं जानता हूँ कि आजादी की देवी बन कर उन्होंने इस मुल्क को सुधारा है। यकीनन वह एक ऐसी शख्स थीं जिन्होंने अपनी कुर्बानियों से, इस हिन्दुस्तान की हिफाजत की है। मैं जानता हूँ कि उन्होंने कुर्बानी करने वालों में, सत्याग्रह करने वालों में आगे रह कर इस मुल्क को आजाद कराया है और हम को, और आपको, और इस मुल्क को दुनिया के सामने ऊंचा उठाया है। यही नहीं, बल्कि जब जब उन्हें हिन्दुस्तान का पैगाम लेकर विदेशों में जाना पड़ा है तब तब उन्होंने बड़ी कामयावी के साथ अपने उस पैगाम को पूरा किया है। मुझे यकीन है कि आने वाली हमारे मुल्क की संतान उनके जीवन का अमर इतिहास पढ़ कर अपने को भाग्यवान समझेगी। आज वह इस दुनिया को छोड़ कर चली गयी हैं फिर भी मुझे यकीन है सारा हिन्दुस्तान उनकी जिंदगी की खुबियों को याद करेगा और उनके कारनामों की तरह अपने कर्त्तव्य का अंजाम दे सकेगा। मुझे यह भी यकीन है कि जिस पैगाम को वह दुनिया के सामने रखा करती थीं, आज उनकी मृत्यु के बाद भी

इस मुल्क के लोग और दुनिया के लोग उसको पूरा करने के लिए भर सक कोशिश करेंगे।

अभी आपके सामने हमारे लीडर आफ दी हाउस ने जो तजवीज पेश की है उसका मैं तहेदिल से ताइद करता हूँ और चाहता हूँ इस हाउस की ओर से उन के दुखी परिवार को यह पैगाम भेज दिया जाय।

*श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंह :

श्रीमान् जी, मुझे आज सुबह जब श्रीमती सरोजिनी नायडू के मरने की खबर मिली, तभी से मेरे दिल को बड़ी चोट पहुँची है। उनकी मृत्यु अचानक ही हो गयी है। यह ठीक है कि पहले भी हम लोग उनकी बीमारी का समाचार कभी कभी सुन लिया करते थे, मगर उनकी उमर ज्यादा होने के कारण यह कोई अस्वाभाविक बात नहीं समझी जाती थी। परन्तु उनके मरने की उम्मीद भी नहीं की जाती थी। इसीलिए जब उनके मरने की खबर मिली है, मेरे दिल को, और यहां के और लोगों के दिल को, बहुत बड़ी और गहरी चोट पहुँची है। जहां तक हम लोगों का ताल्लुक है और जहां तक हमारे विश्वविद्यालय का ताल्लुक है, उन सब लोगों को बहुत बड़ा धक्का पहुंचा है। इसी वर्ष वह पटना विश्वविद्यालय में आयी थीं और इस विश्वविद्यालय ने उनको डाक्टर की उपाधि देकर अपने को बड़ा भाग्यशाली समझा था अभी जैसा कि हमारे मित्र श्रीबाबू ने कहा है वह बिलकुल सही है। वह कह रहे थे कि श्रीमती सरोजिनी नायडू जब पटने में आयी थीं उस अवसर पर उनके जो भाषण हुए थे वह अभी तक हमारे कानों में गूंज रहे हैं। इतना ही नहीं, बल्कि उन्होंने यह भी कहा कि उनकी बातोंसे मुझे दुःख भी हुआ। परन्तु सरोजिनी नायडू की सख्शियत ही ऐसी थी कि कोई भी आदमी उनका विरोध नहीं कर सकता, बल्कि वह अपना हृदय भी उन्हीं को समर्पण कर देता था।

इतना ही नहीं, श्रीमती सरोजिनी नायडू का स्थान संसार की सुप्रसिद्ध महिलाओं में सबसे ऊंचा रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि एक परम विदुषी होती हुई भी वह ब्रिटिश सल्तनत को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए लड़ी गयी आजादी की लड़ाई के मैदान में बड़ी सख्ती के साथ अपने कामों का अंजाम दिया करती थीं और अपनी जगह कायम रहा करती थीं। उनका हृदय इतना कोमल था कि किसी को क्षमा कर देने में सबसे आगे रहा करती थीं मगर साथ ही साथ वे इतनी कठोर हृदयवाली भी थीं कि देश के हित को सामने रख कर कड़ा से कड़ा व्यवहार करने के लिए सदा तैयार रहा करती थीं। उनका हृदय उन महात्माओं की तरह था जो यथार्थ में अपने आदर्श को समझते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करते हैं।

* मा० सदस्य ने भाषण संशोधित नहीं किया।

"वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि" की कहावत को उन्होंने अपनी मृत्यु पर्यन्त निबाहा है, यह उनकी विशेषता थी।

श्रीमती सरोजिनी नायडू न सिर्फ एक शासक ही थीं बल्कि उनके अन्दर ऐसी चीज थी, इतना जोश था कि नवजवानों के लिए वह एक बहुत बड़ा आदर्श खड़ा कर देती थीं और जब २ मौका आया उनलोगों के हर काम के लिए खास कर मुल्क की आजादी हासिल करने के लिए आगे बढ़ने में उनको काफी उत्साह दिलाया करती थीं।

मुझे याद है कि जब कभी कोई सभा हुआ करती थी तो उसमें दो एक हजार आदमियों की भीड़ अगर हो जाती थी तो लोग समझते थे कि बहुत बड़ी सभा हुई है। उस वक्त मैं कलकत्ते में पढ़ रहा था। उनके आने की खबर हमलोगों को हुई। हमलोगों ने एक सभा में उनको बुलाया। यह १९२३-२४ ई० की बात है।

और उस वक्त लाउड-स्पीकर का अच्छा इन्तजाम नहीं था फिर भी लोग शान्तिपूर्वक सुनते ही नहीं रहते बल्कि सुनने में ऐसे लीन हो जाते थे कि उन्हें पता ही नहीं लगता था कि कब से भाषण शुरू हुआ है और कब इसका अन्त हुआ। वे लोगों के मन को अपनी ओर खींच लेती थीं। इस तरह से उनका प्रभाव सभी लोगों के ऊपर था। यह भी आपने देखा है कि हर जगह उनका नाम सुन कर ही लोग उनको देखने एवं उनके भाषणों को सुनने के लिये टूट पड़ते थे।

जब से हमें आजादी मिली है वे गवर्नर होकर संयुक्त प्रांत चली गईं। इस सिलसिले में अपनी संस्कृति के मुताबिक उन्होंने सब काम किया। यही नहीं वे आम तौर पर आज जो दुनियां को भूल जाते हैं, इस तरह की नहीं थीं। उनकी सारी जिन्दगी सुन्दरता से भरी हुई थी। उन्होंने अपने जीवन को हमलोगों के बीच एक आदर्श जीवन के रूप में रखा और जैसा कि हमारे हाउस के, इस सभा के नेता, श्री कृष्ण बाबू ने आपसे कहा कि वे कविता करती थीं और कविता में ही उनकी जिन्दगी थी। वे कला प्रेमी थीं। उनका जीवन कलापूर्ण था। वे आदर्श शासक थीं और उन्होंने अपना आदर्श अन्य लोगों के सामने रखा। दो चार बाहर की चीजों पर ही उनकी जिन्दगी नहीं थी। उनका जीवन मस्तिष्क को प्रोत्साहन देने वाला था। ऐसी सरोजिनी नायडू के मर जाने से इस समय देश की बड़ी क्षति हुई है, इसमें कोई संदेह नहीं।

यह बड़े दुख की बात है कि इस समय जब हमारे यहां अच्छे लोगों की जरूरत है, एक-एक करके हम लोगों को वे छोड़ते जा रहे हैं। हमारे यहां यह शोक का समय आता जा रहा है।

हमें तो मालूम होता है कि जो लोग आजादी की लड़ाई में थे और इसके सिलसिले में जिनको जेल जाना पड़ा था वहां, उन्हें बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी थी। उनके स्वास्थ्य पर इसका बहुत बुरा असर पड़ा जिससे वे अपने को अधिक

दिनों तक नहीं संभाल सकें। हम श्रीमती सरोजिनी नायडू आदि के आदर्श पर चलें तभी आजादी ठीक रह सकती है।

मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता हूँ। हमारे नेता श्रीबाबू ने इस सभा में थोड़े ही शब्दों में यह बतला दिया है कि हमारे लिये वे कितनी महान और कितनी ऊंची जगह पर थीं। अफसोस जरूर है। उनका आदर्श सामने है और उसको ख्याल में रखते हुए उस पर चलने की हमारी कोशिश होनी चाहिये।

आपसे मेरी प्रार्थना है, और जैसा सब लोगों ने कहा है कि हमारी हमदर्दी और सहानुभूति उनके परिवार के लोगों के पास और खास कर उनकी लड़की और पति के पास और साथ-साथ यू० पी० सरकार के पास भी आप भेज दें।

माननीय प्रमुख :

हम सभी लोग खड़े होकर उनकी आत्मा की शान्ति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें।

(सभी सभासद एक मिनट के लिये चुपचाप खड़े हो जाते हैं)

माननीय प्रमुख :

उनके संतप्त परिवार के प्रति आपकी संवेदनाभरी बातों को हम भेज देंगे।

सभा ता० ३-३-४९ के ११॥ बजे दिन तक स्थगित हुई।